• श्रीकृष्ण का...

सुदर्शन चक्र

सभी देवी देवता अलग-अलग शस्त्र धारण करते हैं। जिन्हें अलग-अलग नामों से जाना जाता है. देवी-देवताओं के पास यह अस्त्र- शस्त्र होने का कोई ना कोई कारण है। उसी तरह भगवान कृष्ण अपने हाथ में सुदर्शन चक्र धारण करते हैं। धार्मिक ग्रंथों में सुदर्शन चक्र को सबसे विनाशक अस्त्र कहा जाता है। पौराणिक कथाओं में भी सुदर्शन चक्र का वर्णन मिलता है। लेकिन भगवान कृष्ण को सुदर्शन चक्र कैसे और किसने दिया था।

शिव पुराण के कोटि युद्ध संहिता में सुदर्शन चक्र के बारे में जिक्र मिलता है। भगवान विष्णु के सुदर्शन चक्र का निर्माण भगवान शिव ने किया था, जिसे बाद में उन्होंने भगवान विष्णु को सौंप दिया था। जिसके बाद यह भगवान विष्णु के अवतार भगवान परशुराम के पास पहुंचा। उसके बाद उन्होंने यह चक्र श्रीकृष्ण को दे सौंप दिया था। पौराणिक कथा के अनुसार, जब दैत्यों ने पूरी सृष्टि में अत्याचार बढ़ गया तब सभी देवी- देवता भगवान विष्णु के पास गए। लेकिन दानवों को हराने

के लिए भगवान विष्णु को एक दिव्य अस्त्र की जरूरत थी। जिसके लिए उन्होंने कैलाश पर्वत पर जाकर भगवान शिव की आराधना शुरू कर दी। भगवान विष्णु ने हजार नामों से भोलेनाथ की स्तुति करी और प्रत्येक नाम के साथ एक कमल का फूल भोलेनाथ को अर्पित करते गए। तब भोलेनाथ ने भगवान विष्णु की परीक्षा लेने के लिए उन हजार कमल के पुष्पों में से एक पुष्प को छिपा दिया।

एक पुष्प कम होने पर भगवान विष्णु ने अपनी एक आंख ही शिवजी को अर्पित कर दी। जिसके बाद भोलेनाथ ने प्रसन्न होकर खुद के द्वारा बनाया हुआ सुदर्शन चक्र भगवान श्री हरि विष्णु को भेंट किया। श्री हरी ने यह चक्र धारण किया और कई बार देवताओं को इस चक्र की सहायता से दैत्यों के अत्याचारों से मुक्ति दिलाई। सुदर्शन चक्र भगवान विष्णु के स्वरूप के साथ हमेशा के लिए जुड़ गया। इसके बाद श्री हरी ने यह चक्र आवश्यकता पड़ने पर माता पार्वती को प्रदान किया। माता पार्वती से यह चक्र कई देवी-देवताओं से होता हुआ भगवान परशुराम के पास पहुंच गया।

• वास्तु...

घर का संतुलन

वास्तु शास्त्र के अनुसार, घर का सही संतुलन बनाए रखने के लिए प्रत्येक दिशा और घर में रखी हर एक चीज का विशेष महत्व होता है। घर में रखी वस्तुएं यदि वास्तु शास्त्र के नियमों के अनुसार सही दिशा में रखी जाएं तो ऐसा करने से वास्तु दोष पैदा नहीं होता है। वास्तु शास्त्र में हर दिशा का अपना एक विशेष प्रभाव होता है और हर स्थान पर वस्तुओं की सही व्यवस्था से ही घर में पॉजिटिव एनर्जी का संचार होने लगता है, जिससे घर में सुख, शांति और समृद्धि का वास होता है। वास्तु दोष किसी स्थान में ऊर्जा असंतुलन के कारण उत्पन्न होते हैं, जो सुख-शांति, समृद्धि और स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकते हैं। ज्योतिषाचार्य डॉ. अरुणेश कुमार शर्मा से जानते हैं कि घर के वास्तु दोष को दूर करने के लिए क्या- क्या उपाय करने चाहिए।

- घर के मुख्य दरवाजे को हमेशा उत्तर, पूर्व या उत्तर-पूर्व दिशा में रखें। यह सकारात्मक ऊर्जा के प्रवेश को बढ़ावा देता है।
- रसोई हमेशा दक्षिण-पूर्व (अग्नि कोण) दिशा में होनी चाहिए। खाना पकाने के समय मुख पूर्व दिशा की ओर होना चाहिए।
- बेडरूम हमेशा दक्षिण-पश्चिम में रखें और सोते समय सिर दक्षिण दिशा की ओर, और पैर उत्तर दिशा की ओर होने चाहिए।
- मंदिर या पूजा स्थल उत्तर-पूर्व (ईशान कोण) में होना चाहिए और पूजा करते समय मुख पूर्व या उत्तर की ओर रखें।
- बाथरूम उत्तर-पूर्व दिशा में हो सकता है, लेकिन शौचालय उत्तर-पूर्व में नहीं होना चाहिए। शौचालय के लिए दक्षिण या पश्चिम दिशा उपयुक्त मानी जाती है।
- ड्राइंग रूम हमेशा ऐसे कमरे को ही बनाए जो उत्तर या उत्तर-पूर्व दिशा में हो. ड्राइंग रूम में फर्नीचर को दक्षिण या पश्चिम की ओर रखें।
- अनाज और भारी वस्तुओं को हमेशा घर की दक्षिण-पश्चिम (नैऋत्य) दिशा में रखें।
- सीढ़ियां बहुत महत्वपूर्ण होती हैं। घर की सीढ़ियां हमेशा दक्षिण या पश्चिम दिशा में होनी चाहिए।
- वास्तु शास्त्र के अनुसार, घर में पानी की टंकी उत्तर-पूर्व दिशा में होना सही माना जाता है।
- घर में दर्पण उत्तर या पूर्व दिशा की दीवार पर लगाना चाहिए। इस बात का खास ख्याल रखें कि बेडरूम में दर्पण का सीधा प्रतिबिंब बिस्तर पर नहीं पड़ना चाहिए। बेड के सामने कभी भी दर्पण न लगाएं।
- घर में धन और रुपया पैसा और जेवर रखने की तिजोरी को हमेशा दक्षिण दिशा में रखना चाहिए और इस बात का ध्यान रखें कि तिजोरी का दरवाजा उत्तर दिशा की ओर खुलना चाहिए।
- पिरामिड को घर के उन हिस्सों में रखें जहां वास्तु दोष हो। यह ऊर्जा को संतुलित करने का एक प्रभावी उपाय है।
- मोर पंख को घर के दोषपूर्ण स्थानों पर रखने से नकारात्मक ऊर्जा दूर होती है। इसे मुख्य दरवाजे के पास या पूजा स्थल पर रखना चाहिए।
- नियमित रूप से कपूर और लौंग जलाकर पूरे घर में उसकी सुगंध फैलाएं. ऐसा करने से नकारात्मक ऊर्जा समाप्त होती है।

उत्पन्ना एकादशी

उत्पन्ना एकादशी का व्रत का पूजन करने के लिए सुबह जल्दी उठकर स्नान कर साफ-सुथरे वस्त्र धारण करें। उसके बाद उत्पन्ना एकादशी व्रत का संकल्प लें। फिर एक चौकी पर भगवान विष्णु की मूर्ति या फोटो स्थापित करें।

फिर भगवान विष्णु को पीले फूल, फल, धूप, दीप, नैवेद्य, अक्षत, चंदन और तुलसी दल अर्पित करें। उसके बाद विष्णु जी को दूध, दही, घी, शहद और चीनी से तैयार पंचामृत अर्पित करें...

हिंदू धर्म में एकादशी तिथि का विशेष महत्व है। इस दिन भगवान विष्णु की विधि-विधान से पूजा की जाती है। उत्पन्ना एकादशी का व्रत मार्गशीर्ष मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी तिथि को रखा जाता है। इस दिन माता एकादशी की उत्पत्ति हुई थी। इसलिए इस दिन का खास महत्व है। इस दिन भगवान विष्णु की पूजा और दान पुण्य करना बहुत ही शुभ माना जाता है। मान्यता है कि इस दिन व्रत करने में व्यक्ति को भगवान विष्णु के साथ माता लक्ष्मी का भी आशीर्वाद मिलता है। साथ ही इस दिन कुछ उपाय करने से जीवन में सुख-समृद्धि बनी रहती है।

● **उत्पन्ना एकादशी कब है**-हिंदू पंचांग के अनुसार, मार्गशीर्ष मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी तिथि की शुरुआत 26 नवंबर को 1 बजकर 1 मिनट पर होगी। वहीं तिथि का समापन 27 नवंबर को सुबह 3 बजकर 47 मिनट पर होगा. उदया तिथि के अनुसार, उत्पन्ना एकादशी का व्रत मंगलवार 26 नवंबर को रखा जाएगा।

● उत्पन्ना एकादशी की पूजा करने के लिए भगवान विष्णु की तस्वीर या मूर्ति, फूल, नारियल, सुपारी, फल, मिठाई, लौंग, अक्षत, तुलसी दल, चंदन, धूप, दीप, घी और पंचमृत।

● **उत्पन्ना एकादशी पूजा विधि** -उत्पन्ना एकादशी का व्रत का पूजन करने के लिए सुबह जल्दी उठकर स्नान कर साफ-सुथरे वस्त्र धारण करें। उसके बाद उत्पन्ना एकादशी व्रत का संकल्प लें। फिर एक चौकी पर भगवान विष्णु की मूर्ति या फोटो स्थापित करें। फिर भगवान विष्णु को पीले फूल, फल, धूप, दीप, नैवेद्य, अक्षत, चंदन और तुलसी दल अर्पित करें। उसके बाद विष्णु जी को दूध, दही, घी, शहद और चीनी से तैयार पंचामृत अर्पित करें। विष्णु जी को तुलसी अति प्रिय है इसलिए पंचामृत में तुलसी जरूर डालें। उसके बाद उत्पन्ना एकादशी व्रत कथा का पाठ करें। फिर अंत में आरती करके भोग लगाएं और सब में बांटे।

● **उत्पन्ना एकादशी उपाय**-एकादशी का दिन भगवान विष्णु की कृपा पाने के लिए एक उत्तम दिन माना जाता है. व्यापार में वृद्धि के लिए उत्पन्ना एकादशी के दिन भगवान विष्णु की पूजा में पीले रंग के फूल चढ़ाने के साथ पीले रंग का भोग अर्पित करें। मान्यता है कि ऐसा करने से भगवान विष्णु प्रसन्न होते हैं और कारोबार में तरक्की के योग बनते हैं।

● **दरिद्रता होगी दूर**-घर से दरिद्रता दूर करने के लिए उत्पन्ना एकादशी के दिन सुबह और शाम को तुलसी के पेड़ के नीचे घी का दीपक जलाएं और लक्ष्मी चालीसा का पाठ करें। इसके अलावा पूजा में भगवान विष्णु को 11 तुलसी के पत्तों का भोग लगाएं। मान्यता है कि ऐसा करने से भगवान विष्णु के साथ माता लक्ष्मी का आशीर्वाद मिलता है और दरिद्रता दूर होती है।

● **गृह क्लेश से मुक्ति**-अगर घर में बहुत ज्यादा लड़ाई झगड़े होते हैं और लंबे समय से क्लेश चल रहा है, तो ऐसे में उत्पन्ना एकादशी के दिन घर में दक्षिणावर्ती शंख की स्थापना करें। उसके बाद शंख की धूप-दीप आदि से पूजा करें. मान्यात है कि ऐसा करने से गृह क्लेश से मुक्ति मिलती है।

● **धन लाभ के उपाय**- धन से जुड़ी समस्याओं से मुक्ति पाने के लिए उत्पन्ना एकादशी के दिन भगवान विष्णु के सामने नौ मुखी दीपक के साथ एक अखंड ज्योति जलाएं। ऐसा करने से घर में सकारात्मक ऊर्जा बढ़ती है। मां लक्ष्मी का आशीर्वाद मिलता है। जिससे धन से जुड़ी सभी परेशानियां दूर होती है। दीपक में रुई की जगह कलावे की बाती का प्रयोग करने से यह उपाय ज्यादा असरदार होता है।

■ **पं. कुलदीप शास्त्री**

• सुख-समृद्धि...

श्री यंत्र

जीवन में सुख-समृद्धि और संपत्ति पाने के लिए हर व्यक्ति कठोर परिश्रम और मेहनत करता है, लेकिन फिर भी कुछ कारणों से की हुई मेहनत का सही फल नहीं मिल पाता। हिंदू धर्म शास्त्रों में धन संपत्ति अर्जित करने के कई उपाय बताए गए हैं। उन्हीं में से एक है श्री यंत्र। श्री यंत्र धन की देवी माता लक्ष्मी को माना जाता है। माता लक्ष्मी को प्रसन्न करने का सबसे उत्तम उपाय श्री यंत्र ही है। ऐसा माना जाता है कि श्री यंत्र की सच्चे मन से पूजा करने से माता लक्ष्मी की विशेष कृपा प्राप्त होती है. स्फटिक को श्री यंत्र माता लक्ष्मी को प्रसन्न करने के लिए सबसे उत्तम माना गया है, इसलिए लोग अपने घरों में श्री यंत्र की स्थापना और उसकी पूजा करते हैं। श्री यंत्र को घर में स्थापित करने से पहले किसी अच्छे ज्योतिष विद्वान से श्री यंत्र को स्थापित करने का शुभ मुहूर्त और दिशा जान लेनी चाहिए।

• काली मिर्च ...

यदि कोई व्यक्ति अपने जीवन में आर्थिक परेशानियों से जूझ रहा हो तो काली मिर्च के 5 दाने लेकर उस व्यक्ति को अपने सिर के ऊपर से 7 बार घुमाकर रात के समय किसी चौराहे या सुनसान जगह पर खड़े होकर चारों दिशाओं में चार-चार दाने फेंक देने हैं। बचा हुआ पांचवा दाना आसमान की तरफ उछाल कर फेंक दें। इसके बाद वहां से चुपचाप घर वापस आ जाएं और पीछे पलट कर ना देखें।

स्वामी/प्रकाशक/मुद्रक/संपादकः अनल पत्रवाल द्वारा गांव व डाकघर-रजियाणा, तहसील-नगरोटा बगवां, जिला-कांगड़ा-176056, हिमाचल प्रदेश से प्रकाशित एवं एजीएस पब्लिकेशन्स, डी-67, सेक्टर-6, नोएडा-201301, गौतम बुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश से मुद्रित